Seat No. : _____

AK-105

April-2016

B.A., Sem.-IV

CC-213 : Hindi

मध्यकालीन हिन्दी कविता

(सगुण भक्ति और रीतिकाव्य)

Time : 3 Hours] **[Max. Marks : 70**

1. रामभक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए । **14**

अथवा

सगुण भक्ति का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएँ लिखिए ।

2. रीतिकाल की काव्यगत प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए । **14**

अथवा

रीतिकाल के नामकरण को स्पष्ट कीजिए ।

3. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : **14**

(अ) सूरदास **अथवा** अष्टछाप

(आ) सुदामा-चरित्र **अथवा** मीराबाई

4. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए । **14**

(क) जाके प्रिय न राम वैदेही ।
सो छाँड़िये कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ।।
तज्यो पिता प्रहलाद, विभीषण बंधु, भरत महतारी ।
बलि गुरु तज्यों, कंत ब्रज-बनितन, भए मुंद मंगलकारी ।।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद-सुसेव्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटै बहुतक कहौं कहाँ लौं ।।

अथवा

सोभित कर नवनीत लिए ।

घुटुरुनि चलत रेनु-तन-मंडित, मुख दधि लेप किए ।।

चारू कपोल लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिए ।

लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन, मादक मधुहिं पिए ।।

(ख) या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ ।

ज्यों ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्जलु होइ ।।

अथवा

जप माला, छापै तिलक, सरै न एको कामु ।

मन-काँचै नाचै वृथा, साँचे राँचै रामु ।।

5. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **14**

(अ) योग्य विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) _____ तुलसीदास की प्रसिद्ध रचना है । (रामचरितमानस, सुदामाचरित्र, सूरसागर)

(2) मीरा ने _____ भाव से कृष्ण की उपासना की है । (दास्य, सख्य, माधुर्य)

(3) 'अष्टछाप' में कुल _____ कृष्ण भक्त कवि हैं । (सात, आठ, नव)

(4) घनानन्द _____ कवि हैं । (रीतिबद्ध, रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध)

(5) बिहारी _____ के दरबारी कवि थे । (जयसिंह, मानसिंह, जयचन्द)

(6) तुलसीदास के गुरु का नाम _____ था । (वल्लभाचार्य, नरहरिदास, रामानन्द)

(7) 'मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई' _____ की प्रसिद्ध पंक्ति है । (सूरदास, कृष्णदास, बिहारी)

(आ) निम्नलिखित वाक्यों में से सही वाक्य के सामने सही (✓) और गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए ।

(1) केशवदास भक्तिकाल के कवि थे ।

(2) सूरदास पुष्टिमार्ग के अनुयायी थे ।

(3) गीतावली तुलसीदास की रचना नहीं है ।

(4) तुलसीदास का विवाह रत्नावली से हुआ था ।

(5) घनानन्द का सुजान-प्रेम कृष्ण प्रेम में बदल गया ।

(6) भ्रमरगीत अर्थात् उद्धव-गोपी संवाद माना जाता है ।

(7) कविप्रिया के कवि का नाम नरोत्तमदास है ।